

२० नमः शिवाय कृष्णाय ॥ १ ॥ वज्रमालावाच ॥ ॥ निरुद्धा नखा
कायं शंभो गुणमसाग्रं ॥ दिवा लम्बनिनाका वाजप्रभुमिह नानादिप्रस्थिता
॥ १ ॥ समस्तसत्त्वगालिनी कर्ममहाहि स्वधर्मवर्य ॥ यादा नयादक यम ८
कुलकमध्याम कुर्व ॥ २ ॥ आकाशकायनद्वी ॥ प्रहाया नमिह कुर्व ॥ वज्र
मालावाच ॥ १ ॥ प्रहाया नमिह कुर्व ॥ २ ॥ ॥ शंभो वनसिता रुर्व वाममुख

॥ १२ ॥ प्रह्लायात्रमिनावात्र। वरुदेवीसभाहव। आमफुगाहवनागः आकाश
 दि रगभघमभुर्न ॥ १३ ॥ सार्द्धेनगिरोवनाक्षयत्रगिमामकि। नागत्रगियाधु
 वाददीनामोवऊनगि॥ १४ ॥ यथिवीलावनाकाका। आयत्राउमाः
 मकि। गजयाउनाश्चैववायूनावाचकिर्किगा॥ १५ ॥ वऊसत्त्ववा
 व॥ ॥ ॥ विस्ववऊरुमिस्थायं वरुदिर्गवऊधुवि। आकाशगगग

गऊ मध्यस्थज्जात्यामम॥ १६ ॥ गऊयूर्ववेनावदहिननत्तसक
 वयश्चिमयजमुनाह। उरुत्रज्जाभाघसिद्धि॥ १७ ॥ आत्यकागस्तसाव
 ना। नेशुनद्वीमामकि। वायूवयोउद्वी। ऊर्गाद्वीआर्यागात्रा॥ १८ ॥
 रुनिगर्लमभुन॥ ॥ ॥ आत्यस्तुस्यनयवऊ। नेशुनगदवऊ। वायूव्या
 गधवऊ। ऊर्गागानस्यनसवऊ॥ १९ ॥ पूर्ववाचापरिंकार्या। मेरिय

त्रिनिगर्ह दक्षिणसुप्रति कार्या वडयालिषक्तार्थम् ॥ २० ॥ यश्चिन्मरुयः
 त्रिकाया लाकधनमस्तु श्रीय सर्वसिख विस्फुल्लिममक रुदस्य डहने ॥ २१ ॥
 पूर्वघागयमोक्त दक्षिणघागपुष्पाक्त यश्चिन्मद्वानयप्राक्त डहने घानः ३
 विघाक्त ॥ २२ ॥ ह्रीं ग्लोका नक्त वन ज्ञानकार लटकि नाक नैशक्त
 वीनदल वायव्य समस्त वन ॥ २३ ॥ चनगथा व्याका ॥ दिविदिगं लिखो
 गत

इव वक्तुष्टि वीम मुन रुव रुव डफ वनः ॥ २४ ॥ पुष्पादवी वाव ॥ ० ॥
 यनमयुव डसत्व यिमा सर्वतथागता नरुद मिन्नतनालि डयलि नमानः
 व्याना ॥ २५ ॥ वक्तुसत्व वाच ॥ ० ॥ समन रुड निर्वील क रुव नगाव्य
 सिद्ध ॥ नृनिर्वील कृगलील डत्यलि नरुव डवर्ग ॥ २६ ॥ अकमिप्रगीति
 वीर वक्तुवायव्य लिङ्ग वक्तु वदकृति मरुव वाह नयवैश्वर्य दयना हो ॥ २७

॥ यस्य स्रज्या नृपादः वक्रस्रविस्थाभायति वक्रमांसनातां कुरुनाताय क्रिय
 यित्रिका ॥ २६ ॥ समनरुदसर्वप्रसनीतव्यायिता ॥ ॥ पुर्वलाक
 कश्चनलाक सर्वप्रनियानिनायाधानास्ति यन्मोर्नशुत्वायुहायानमिता ॥ ७
 २७ ॥ सुहादवीवाव ॥ ॥ अर्यदववक्रसत्त्वदिनवाशीकर्थप्ररु ॥ न
 प्रताकप्रनरु यस्य दवायनाक्रम ॥ २८ ॥ वक्रसत्त्ववाव ॥ ॥ शो

कश्चनयनाक्रम ॥ ललाटा मरुश्चनचक्रद्वयावद्वस्योदन्तशिक्षागत्रशक्ति
 ॥ ३१ ॥ स्वाधेवमहावायुसत्त्वधर्ममध्ववावद्वयवाहस्यध्ववक्त्राज्ञद
 यानात्रायस ॥ ३२ ॥ उदग्रनयवगातनाहानयावानरुनकशुभागर्ग
 समुद्रपादर्याष्टथीविमल्ल ॥ ३३ ॥ रुद्रदहिनर्ळुद्रवाहवापुङ्गव
 मनाजादहिनान्वननागवामजावक्रवलना ॥ ३७ ॥ नस्यदवलाक

श्री

नाथ प्राकमताय नमः ॥ दितनाशोय कवि सदा थील व ऊय द ॥ ३५ ॥
दवी वाच ॥ ॥ ननु ४ मानवा व उर्वर्णा कर्म कस्य वा यात्र ॥ स्नात दात
नित्य कर्म कथं कस्य व ऊ सत्व ॥ ३६ ॥ सत्व गुण वाच ॥ ध्रुव जा नीवः
जाचार्य मतु स्नात नित्य कर्म ॥ वक्तु नानि हि रुनी व धर्म धर्म कर्म गुण
॥ ३७ ॥ कृति नीव वैष्णवा ॥ दानं दद्यात्प्रजावदि वैष्णव कर्म वैष्णवा

व गूडस्य क्वि कर्म ॥ ३८ ॥ ॥ ॥ सत्व गुण व जाचार्य ला विन ॥
नते वद वै गुमता ॥ धन प्राहा वि विनि ॥ सर्व या या सर्व ॥ ३९ ॥ सर्व दि वि
मा कर्ष ॥ ॥ लायानि ॥ गुरु कुरु ॥ पृथु पीरु कि शा रुव धन धन वाच ॥ ४० ॥
नत र्म या य गुरु ॥ ॥ ॥ ॥ नि शी पुत्ता नि न ॥ न व ऊ सत्व काय सा वि यु व
न उत्य लि स प्रा प ॥ ॥ ॥ ॥ य धर्मा वा द्या दि ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वज्रालोक १२

DH 249

धर्मरत्न बजाजाने पुरत श्री महाविहार